आदमी नामा

पठन सामग्री और व्याख्या

व्याख्या

'आदमानामा' कविता में मानव के विविध रूपों पर प्रकाश डाला गया है। कवि के अनुसार मानव में अनेक संभावनाएँ छिपी हुई हैं। उसकी परिस्थियाँ और भाग्य भी भिन्न हैं जिसके कारण उसे भिन्न-भिन्न रूपों में जीवन जीना पड़ता है।

(1)
इन पंक्तियों में में नजीर ने कहा है कि इस दुनिया में सभी आदमी हैं। बादशाह भी आदमी है तथा गरीब भी आदमी ही है। मालदार भी आदमी ही है और कमजोर भी आदमी है। जिसे खाने की कमी नही है वो भी आदमी है और जिसे मुश्किल से रोटी मिलती है वो भी आदमी ही है।

(2)
इस भाग में नजीर ने आदमी के विभिन्न कामों के बारे में बतलाया है। मस्जिद का भी निर्माण आदमी ने किया है और उसके अंदर उपदेश देने का काम भी आदमी ही करते हैं साथ ही वहां जाकर कुरान-नमाज़ भी आदमी ही अदा करते हैं। मस्जिद के बाहर जूतियाँ चुराने का काम आदमी ही करता है तथा उनको भगाने के लिए भी आदमी ही रहता है।
(3)

इस भाग में नजीर ने बताया है की एक आदमी दूसरे की जान लेने में लगा रहता है तो दूसरा आदमी किसी की जान बचाने में लगा रहता है। कोई आदमी किसी की इज्जत उतारता है तो मदद की पुकार सुनकर भी उसे बचाने कोई आदमी ही आता है।

(4)
इन पंक्तियों द्वारा स्पष्ट किया है की इस दुनिया सब कुछ आदमी ही करते हैं। आदमी ही आदमी का मुरीद है तथा आदमी ही आदमी का दुश्मन। बुरे और अच्छे दोनों आदमी ही कहलाते हैं।

कवि परिचय

नजीर अकबराबादी

इनका जन्म आगरा शहर में सन 1735 में हुआ। इन्होने आगरा के अरबी-फ़ारसी के मशहूर अदीबों से तालीम हासिल की। नजीर हिन्दू त्योहारों में बहुत दिलचस्पी लेते थे और शामिल होकर दिलोजान से लुत्फ़ उठाते थे। नजीर दुनिया के रंग में रंगे हुए महाकवि थे।

कठिन शब्दों के अर्थ

- बादशाह - राजा
- मुफ़लिस - गरीब
- गदा - भिखारी
- जरदार - मालदार
- बेनवा - कमजोर
- निअमत - स्वादिष्ट भोजन
- इममम - नमाज पढ़नेवाले
- ताड़ता - भांप लेना
- खुतबाख्वां - कुरान शरीफ का अर्थ बतानेवाला
- अशराफ़ - शरीफ
- दिल-पजीर - दिल पसंद

कविता का सार

नशीर अकबराबादी की चार नश्में इस पाठ में संकलित हैं। इसका शीर्षक 'आदमीनामा' है। आदमी कवि की दृष्टि में कुदरत का सबसे नायाब तोहपफा है। कवि ने आदमी को आईना दिखाकर उसको अपना सही चेहरा दिखाना चाहा है। आदमी में क्या-क्या अच्छाइयाँ हैं, क्या-क्या बुराइयाँ हैं तथा उसकी क्या सीमाएँ एवं संभावनाएँ हैं - कवि ने हमें बखूबी बता दिया है। आदमी अपने-आपको जो कुछ भी समझता हो लेकिन उसे हमेशा याद रखना चाहिए कि सबसे पहले वह एक आदमी है। यह अलग बात है कि आदमी में ही कोई बादशाह है तो कोई फकीर है, कोई कलाकार है तो कोई दगाबाज़ है। आदमी का स्वभाव तरह-तरह का होता है। यह दीगर बात है कि आदमी में ही कोई हिंदू है तो कोई मुसलमान है। कोई मंदिर में बैठकर पूजा-पाठ करता है, घंटी और शंख बजाता है, तो कोई मसजिद में सिजदे करता है, नमाश अदा करता है, अशान देता है और कोई गुरफद्वारे में गुरफ ग्रंथसाहब का सस्वर पाठ करता है। कवि ने आदमी के दुर्गुणों की ओर इशारा करते हुए यह भी कहा है कि आदमी, आदमी होते हुए भी आदमी को ही जान से मारता भी है, आदमी ही तलवार और कटार चलाता है, आदमी किसी की पगड़ी 'इज्ज़त' उतार देता है और

आदमी वह भी है जो किसी के दुख-दर्द में उसकी चीत्कार सुनकर दौड़ पड़ता है। आदमी में शरीफ लोग भी हैं और कमीने भी हैं।

आदमी अच्छा भी है और बुरा भी है। यह अपनी अपनी समझदारी है कि आदमी आदमी होते हुए भी किस तरह के आदमी का काम करें अशराफ का या कमीनों का। कवि ने आदमी के चरित्रा पर मयान दिया तो उसे पता चला कि कुछ लोग चरित्रावान हैं तो वुफछ चरित्राहीन हैं। काफी तल्ख शब्दों में कवि ने बेबाक कहना उचित समझा और कहा कि कुछ आदमी मसशिद में अज़ान देने या पा!चों वक्त की नमाश अदा करने जाते हैं तो कुछ लोग जूतिया! चुराने भी जाते हैं। और कुछ वे लेाग भी हैं जो न तो नमाज़ अदा करते हैं, न कुरान का पाठ करते हैं, न जूतिया! चुराते हैं बल्कि जूतिया! चुराने वाले को ताड़ या भाप लेते हैं।